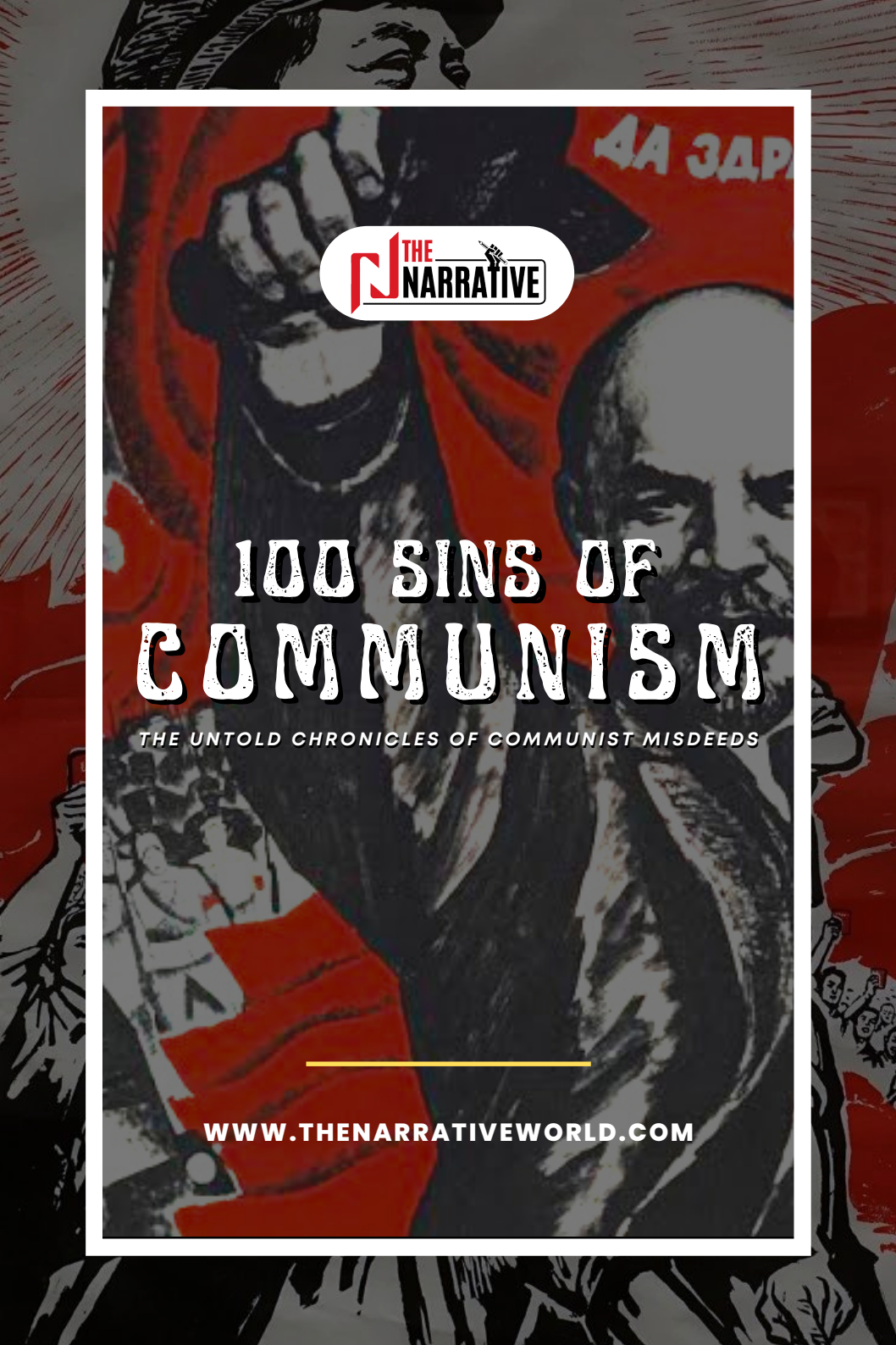
THE NARRATIVE
100 SINS OF
COMMUNISM
THE UNTOLD CHRONICLES OF COMMUNIST MISDEEDS
WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

सुधी पाठकगण

सादर नमस्कार,

Communism जिसे वामपंथ, लेफ्ट आदि कई नामों से जाना जाता है, एक ऐसी विचारधारा जिसने दुनिया के कई राष्ट्रों को तथाकथित समानता की क्रांति के नाम पर रक्तरंजित किया।

जिसने क्रूरता की पराकाष्ठा को लांघ कर वर्षों तक बर्बरता की।

जो स्वभाव बदलकर क्षद्म रूप में भारत समेत कई और लोकतांत्रिक राष्ट्रों को आज भी खोखला करने पर आमादा है।

प्रधानमंत्री मोदी क्यूं इन्हें टुकड़े - टुकड़े गैंग कहते हैं, क्यों इन्हें देश विरोधी या विभाजनकारी शक्तियों की श्रेणी में रखा जाता है ?

इनके कुकृत्यों की पड़ताल कर, विश्व भर में Communism द्वारा किए 100 बड़े नरसंहारों, अत्याचारों, घटनाओं को आपके समक्ष तथ्यात्मक रूप से लाने के लिए।

100 Sins of Communism
वामपंथ के 100 अपराध
की यह साप्ताहिक श्रृंखला हमने शुरु की है।

इसी क्रम में आज इस श्रृंखला के प्रथम 10 भागों को संकलित करती हुई विशेष पुस्तिका/ ग्रंथिका आपके संग्रह हेतु प्रस्तुत है।

आशा है कि वामपंथी/कम्युनिस्ट रक्तरंजित विचार को उसके मूल स्वरूप में समझने के लिए यह उपयोगी रहेगी।

कृपया आप अपने विचार और सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं।
TEAM THE NARRATIVE

क्यूबा नरसंहार 1959

(जब विचारधारा के नाम पर लगा मौत का तमाशा)

- जनवरी 1959 में लैटिन अमेरिकी राष्ट्रपति क्यूबा पर फिडेल कास्त्रे एवं गुएवेरा की अगुवाई में वामपंथी विरोधियों ने सत्तारूढ़ बटिस्टन को हराकर एकाधिकार स्थापित कर लिया।

- सत्ता में काबिज होते हैं वामवादी पैरोकारों ने अपने विरोधियों के नरसंहार का आदेश दिया।

- इस दौरान ला कबरा एवं सांता क्लारा स्थित कारागारों में सैकड़ों लोगों की नृशंस हत्या की गई।

- पूर्व में सत्तारूढ़ पार्टी के समर्थकों की हत्याओं के लिए कथित न्यायाधिकरण की स्थापना की गई थी जिसका एकमात्र उद्देश्य विरोधियों की मौत की सजा सुनाना था।

- सत्तारूढ़ वामपंथी, एक-एक मौत का जश्न मनाते, जेनिन लोरक्स के शब्दों में विरोधियों की मौत वामपंथियों के लिए उत्सव की तरह था।

- इसी नरसंहार के दौरान 18000 लोगों की उपस्थिति में वामपंथी विचारधारा का विरोध करने वाले बटिस्टन कमांडर सोसा ब्लांको को प्राचीन रोम की शैली में लोगों के शोरगुल के बीच अंगूठी को नीचे की ओर सांकेतिक करके गोली मारी गई थी।

कोलयमा हाइवे (रोड़ ऑफ बोन्स)

(जब रक्तपिपासु तानाशाह ने ले ली 10 लाख मजदूरों की जान)

- वामपंथी सनक क्रूरता की सीमाएं किस प्रकार लांग सकती है उसे पूर्वी रूस की एक सड़क बखूबी जताती है।
- रोड ऑफ़ बोन्स (हड्डियों की सड़क) के नाम से विख्यात लगभग 2000 किलोमीटर लंबी इस सड़क के निर्माण में वामपंथी तानाशाह स्टॉलिन के निर्देश पर लाखों लोगों की जान ले ली गई थी।
- इस सड़क निर्माण में लगे मजदूर गुलाग केंपों के थे, जिन्हें वामपंथी विचारधारा से विपरीत विचार रखने पर बंधुआ मजदूरी कराए जाने के लिए बंदी बनाया गया था।
- बताया जाता है कि १९३० के दशक में निर्माण के दौरान इन मजदूरों से मरते दम तक मजदूरी कराई गई थी और मृत्यु के उपरांत सड़क निर्माण में उपयोग किए जाने वाले बालू के साथ इन मजदूरों की हड्डियों को मिला दिया जाता था।
- इस कुकृत्य के पीछे स्टॉलिन की सोच, अत्यधिक बर्फ गिरने की परिस्थिति में सड़कों की चिकनाई को हड्डियों के प्रयोग से कम करना था।
- तत्कालीन सोवियत संघ और वर्तमान की रूस के पश्चिम में निझने बेस्टयाख को पूर्व में मगडान से जोड़ने वाली सड़क में १० लाख मजदूरों की हड्डियों को मिलाया गया था, जिसके प्रमाण समय-समय पर आज भी सामने आते रहते हैं।

बीजापुर हमला

(जब वामपंथी बंदूकों से थर्राया जोन्नागुड़ा)

- 2 अप्रैल 2021 को छत्तीसगढ़ के बीजापुर में वामपंथी आतंकियों की टोह में निकली जवानों पर 3 अप्रैल को घात लगाकर बैठे माओवादियों ने हमला कर दिया।
- इस हमले के दौरान माओवादियों ने सुरक्षाबलों की टुकड़ी को तीन तरफ से घेर कर उन पर हमला बोला।
- लगभग 250 से अधिक की संख्या में उपस्थित वामपंथी आतंकियों से 50-60 जवानों की टुकड़ी ने 5-6 घंटे तक पुरजोर संघर्ष किया।
- माओवादियों ने इस हमले में सुरक्षा बलों पर एलएमजी रॉकेट लॉन्चर एवं नुकीले हथियारों से हमला किया।
- माओवादियों की बुने जाल में फंसी जवानों ने बहादुरी से लड़ते हुए 9 माओवादियों को मार गिराया हालांकि संख्या में बेहद कम होने के कारण इस हमले में 22 भारतीय जवान माओवादियों से लोहा लेते हुए बलिदान हुए, जबकि 32 जवान गंभीर रूप से घायल हुए।
- सुकमा के जोन्नागुड़ा में हुए इस हमले का नेतृत्व पीएलजीए बटालियन नंबर 1 का कमांडर कुख्यात माओवादी मड़ावी हिड़मा कर रहा था जो अब भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है।

सेनारी नरसंहार

(जब वामपंथी रक्तपात से कांप गया था बिहार)

- 18 मार्च 1999 किसान बिहार में माओइस्ट कम्युनिटी सेंटर(एमसीसी) के कैडरों ने तत्कालीन जहानाबाद अखल की सेनारी गांव में हमला बोल दिया।

- हमले के दौरान पुलिस की वर्दी में आए माओवादियों ने गांव की एक-एक घर से लोगों को चुन चुन कर निकाला और उन्हें समीप की ही ठाकुरबाड़ी ले गए।

- इस विभक्त नरसंहार में माओवादियों ने मारने के क्रम में लोगों के पेट तक को चीर डाला था, कई लोगों को गला रेतने से पहले तड़पाया गया, लगभग ४ घंटे के उपरांत जब माओवादी सेनारी से गए तो गांव में क्षत विक्षत अवस्था में ३४ शव पड़े थे।

- इस हृदय विदारक घटना में न्यायालय ने 11 अभियुक्तों को मृत्युदंड दिया था, जिसे साक्ष्यों के अभाव में उच्च न्यायालय ने रद्द करते हुए सभी अभियुक्तों को बरी कर दिया।

- माओवादियों की अमानवीय आचरण एवं क्रूरता को परिभाषित करते इस नरसंहार की स्मृति आज भी सेनारी के लोगों को झकझोर कर रख देती है।

चीन की सांस्कृतिक क्रांति

(जब संस्कृति के नाम पर कम्युनिस्टों ने किया था सड़कों पर रक्तपात)

- वर्ष 1966 में चीनी कम्युनिस्ट तानाशाह माओ जेदोंग ने सत्ता में अपनी पकड़ को मजबूत रखने के लिए कई अभियान चलाए इनमें से एक थी सांस्कृतिक क्रांति।
- इस तथाकथित क्रांति को लेकर माओ ने 16 मई की अधिसूचना जारी करते हुए कहा कि चीन के विभिन्न महत्वपूर्ण वैचारिक एवं वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों पर अब सर्वहारा वर्ग का आधिपत्य नहीं रहा जिसे परिवर्तित किए जाने की आवश्यकता है।
- इस अभियान की अगुवाई के लिए माओ ने विश्वविद्यालयों के छात्रों छात्राओं का आव्हान किया जिन्हे रेड गार्ड्स के रूप में गठित किया गया।
- अगले 2 वर्षों तक माओ के आदेश पर रेड गार्ड्स ने सड़कों पर जमकर उत्पात मचाया, हजारों प्राध्यापकों, बुद्धिजीवियों की नृशंस हत्याएं की, पुस्तकालय में आग लगा दी गई और चीन को माओ की पोस्टरों, बैनरों से पाट दिया गया।
- 2 वर्षों तक हिंसा और रक्तपात के उपरांत माओ ने वर्ष 1968 में यह कहते हुए इस अभियान को वापस लिया कि ऐसी क्रांति प्रत्येक दशक में होनी चाहिए।
- हालांकि आधिकारिक रूप से अभियान की समाप्ति के उपरांत भी माओ की लगाई हुई आग 1976 में माओ की मृत्यु तक धधकती रही, इस क्रांति ने चीन की एक पूरी पीढ़ी को बर्बाद कर दिया, जिसे कालांतर में चीन की "खोई हुई पीढ़ी" नाम से जाना गया।

कोरियाई नरसंहार

(जब अपने ही कैडरों के रक्त का प्यासा बना वामपंथी तानाशाह)

- वामपंथी विचारधारा के मूल में दूसरे किसी भी विचारधारा को हिंसा के बल पर मिटा देना समाहित रहा है हालांकि दुनिया में ऐसी भी कई उदाहरण है जहां यह विचारधारा अपने ही कैडरों के रक्त की प्यासी दिखाई दी है।

- वर्ष 1958 में 1960 में उत्तर कोरिया में वामपंथी सरकार द्वारा अपने ही कैडरों की हत्याएं ऐसी ही एक उदाहरण है।

- 2 वर्षों की इस कालखंड में कोरियाई वामपंथी नेता किंग सुन के आदेश अनुसार कोरियाई न्यायालय में इस दौरान पार्टी के अपने ही कैडरों पर अमेरिकी एजेंट होने का आरोप मरते हुए उनकी नृशंस हत्या की।

- कागजों पर वर्तमान में मृत्युदंड पाने वाले पार्टी कैडरों की संख्या 47 बताई जाती है।

- जबकि वास्तविकता में इस दौरान कम से कम 9000 वामपंथी कैडरों को अमेरिकी एजेंट बताकर उनकी हत्या कर दी गई थी।

- कई विशेषज्ञों द्वारा तो इन आंकड़ों को 90 हजार तक होने का दावा किया जाता रहा है माना जाता है कि इस कालखंड में शुरू हुआ हत्यारों का क्रम कमोबेश 1960 के कालखंड तक जारी रहा।

सोवर की क्रांति, अप्रैल 1978

(जब सत्ता की लोलुपता ने 10 हजार अफ़ग़ानों की जान ली)

- वर्ष 1978 में अफ़ग़ानिस्तान में सत्ता पाने की अपनी लालसा की अभिपूर्ती के लिए अफगानी कम्युनिस्ट नेता हफीजुल अमीन के नेतृत्व में अफगानी कम्युनिस्ट पार्टी (PDPA) के ख़ल्क़ गुट के सदस्यों ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया।

- सत्ता की प्राप्ति के लिए कम्युनिस्टों ने सबसे पहले 27 अप्रैल को राष्ट्रीय भवन को निशाना बनाया और अगले दिन तात्कालिक राष्ट्रपति दाऊद एवं उनके परिवार के 17 सदस्यों की बर्बरता से हत्या कर दी।

- सत्ता में काबिज होने के उपरांत वामपंथी राष्ट्रपति नूर मोहम्मद ने तत्काल प्रभाव से ख़ल्क़ गुट के प्रभुत्व वाली सेना को वामपंथी विचारधारा के विरोधियों के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए निर्देशित किया।

- फलस्वरूप वामपंथी राष्ट्रपति के आदेश पर चलाए गए अभियान में जहां 15000 से अधिक लोगों को जेलों में ठूस दिया गया वहीं इसी दौरान लगभग 10000 लोगों की नृशंस हत्याएं कर दी गई।

- ये अफ़ग़ानिस्तान में बंदूक के जोर पर वामपंथी व्यवस्था को लागू करने की कवायद की शुरुवात थी जिसने कालांतर में अफ़ग़ानिस्तान को एक दीर्घकालिक गृहयुद्ध में धकेल दिया।

तियानमेन चौक नरसंहार 1989

(जब मौलिक अधिकार मांग रहे युवाओं को वामपंथी टैंकों ने रौंदा)

- 1980 के दशक में चीन में आर्थिक सुधारों के साथ ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग भी जोर पकड़ रही थी।
- स्वतंत्रता की मांग कर रहे युवाओं को चीनी नेता हु यॉबंग से बड़ी उम्मीदें थी, फलस्वरूप चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने यॉबंग से धीरे-धीरे किनारा कर लिया।
- 1989 में उनकी मृत्यु के उपरांत पार्टी द्वारा उनके अंत्येष्टि में राजकीय सम्मान दिए जाने को लेकर संशय के बीच युवाओं का गुस्सा फूट पड़ा।
- तियानमेन चौक पे युवाओं का बड़ा हुजूम उमड़ पड़ा और यॉबोंग कि अंतेयष्टि के दौरान अधिक राजनैतिक और मौलिक स्वतंत्रता के पक्ष में नारेबाजी की गई, मई के अंतिम सप्ताह तक तियानमेन चौक पर लाखों प्रदर्शनकारियों का विशाल हुजूम एकत्रित हो गया था।
- हिंसा और रक्तपात की विरासत को सहेजने वाली पार्टी ने युवाओं के आंदोलन को बर्बरता से कुचलने में देर ना कि, तियानमेन चौक पर प्रदर्शन कर रहे युवाओं को पार्टी के निर्देश पर टैंकों से रौंद दिया गया।
- इस नरसंहार में कम से कम 10000 युवाओं की नृशंस हत्या की गई, पार्टी का संदेश स्पष्ट था चीन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं।

चूरक्कड़ बीजू हत्याकांड, केरल

- वामपंथियों की एक घोषित रणनीति यह रही है कि दुनिया में जहां कहीं भी उन्हें सत्ता मिली उन्होंने सुनिश्चित किया कि वहां विपरीत विचारधारा के व्यक्ति अथवा दल के लिए कोई स्थान ना हो।

- अपनी इस नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए ऐसे स्थानों पर वामपंथी सरकारे व्यापक रूप से राजनीतिक हिंसा का सहारा भी लेते आई हैं।

- इसी क्रम में भारत के दक्षिणवर्ती राज्य केरल में सीपीआई (एम) के कैडरों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता रहे चुरक्कड़ बीजू की 12 मई वर्ष 2017 को नृशंस हत्या कर दी।

- केरल के कन्नूर जिले में हुए इस जघन्य हत्याकांड में संघ कार्यकर्ता बीजू को तब मारा गया जब वे मंगलोर से अपने मित्र के साथ अपने घर पयंनुर की ओर लौट रहे थे।

- घटना की शाम अपने मित्र के साथ घर लौट रहे बीजू की बाइक को आरोपियों द्वारा पहले तो टक्कर मारी गई एवं उसके बाद धारदार हथियार से मुख्य आरोपी उन पर तब तक वार करते रहे जब तक उनकी मौत ना हो गई।

- इस हृदयविदारक हत्या को अंजाम देने वाले मुख्य आरोपी रिहनीस, अनूप एवं उनके पांचों सहयोगी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया मार्क्सिस्ट से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे जिनका यह हिंसक आचरण वामपंथी राजनीतिक स्वरूप के मूल को ही उजागर करता है।

होलडोमर नरसंहार 1932-33

(जब अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों के कारण मारे गए लाखो लोग)

- विश्व के आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह घटनाओं में से एक होलडोमर नरसंहार की स्मृति आज भी लोगों को झकझोर देती है
- इस भयावह नरसंहार को कम्युनिस्ट इतिहासकार प्राकृतिक त्रासदी से जोड़ते आए हैं जबकि इस मानव-निर्मित त्रासदी/नरसंहार के पीछे प्रत्यक्ष रूप से रूसी तानाशाह जोसफ स्टॅलिन की रूसी औधोगिकीकरण की सनक ही उत्तरदायी थी
- स्टॅलिन के नेतृत्व में वर्ष 1930 में रूस की कम्युनिस्ट तानाशाही सरकार ने कृषि से संबंधित अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों को कठोरता से लागू कर दिया जिसने 1932-33 में यूक्रेन के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी को आकार दिया
- अनाज की पैदावार कम होने के उपरांत भी कम्युनिस्ट तानाशाही तंत्र ने मॉस्को एवं दूसरे देशों में इसका निर्यात निर्बाध रूप से जारी रखा परिणामस्वरूप यूक्रेन में लोग दाने-दाने को तरसने लगे
- कम्युनिस्टों की बर्बरता ऐसी कि इस भीषण अकाल के दौरान यूक्रेन की सीमा को सील कर दिया गया, आँकड़ो के अनुसार लगभग 2 वर्षो की इस कालखंड में कम से कम 33 लाख लोग काल के गर्त में समा गए
- कम्युनिस्टों की बर्बरता के शिकार हुए इन लोगों की स्मृति को यूक्रेन के पेकसर्क के राष्ट्रीय संग्रहालय में सहेजा गया है जहां लोग प्रतिवर्ष नवंबर के चौथे शनिवार को होलडोमर के पीड़ितों को श्रद्धांजलि देते हैं

होलडोमर नरसंहार 1932-33

(जब अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों के कारण मारे गए लाखो लोग)

- विश्व के आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह घटनाओं में से एक होलडोमर नरसंहार की स्मृति आज भी लोगों को झकझोर देती है
- इस भयावह नरसंहार को कम्युनिस्ट इतिहासकार प्राकृतिक त्रासदी से जोड़ते आए हैं जबकि इस मानव-निर्मित त्रासदी/नरसंहार के पीछे प्रत्यक्ष रूप से रूसी तानाशाह जोसफ स्टॅलिन की रूसी औधोगिकीकरण की सनक ही उत्तरदायी थी
- स्टॅलिन के नेतृत्व में वर्ष 1930 में रूस की कम्युनिस्ट तानाशाही सरकार ने कृषि से संबंधित अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों को कठोरता से लागू कर दिया जिसने 1932-33 में यूक्रेन के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी को आकार दिया
- अनाज की पैदावार कम होने के उपरांत भी कम्युनिस्ट तानाशाही तंत्र ने मॉस्को एवं दूसरे देशों में इसका निर्यात निर्बाध रूप से जारी रखा परिणामस्वरूप यूक्रेन में लोग दाने-दाने को तरसने लगे
- कम्युनिस्टों की बर्बरता ऐसी कि इस भीषण अकाल के दौरान यूक्रेन की सीमा को सील कर दिया गया, आँकड़ो के अनुसार लगभग 2 वर्षो की इस कालखंड में कम से कम 33 लाख लोग काल के गर्त में समा गए
- कम्युनिस्टों की बर्बरता के शिकार हुए इन लोगों की स्मृति को यूक्रेन के पेकसर्क के राष्ट्रीय संग्रहालय में सहेजा गया है जहां लोग प्रतिवर्ष नवंबर के चौथे शनिवार को होलडोमर के पीड़ितों को श्रद्धांजलि देते हैं

बुर्कापाल माओवादी हमला

(जब कम्युनिस्ट आतंक की लाली से लाल हुई दंडकारण्य की माटी)

- छत्तीसगढ़ प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण प्रदेश है हालांकि अनूठी जनजातीय परंपराओं के लिए विश्व-विख्यात प्रदेश के दंडकारण्य क्षेत्र की माटी दशकों से कम्युनिस्ट रक्तरंजित हिंसा से लाल रही है

- इसी क्षेत्र में वर्ष 2017 के अप्रैल की 24 तारीख ऐसी ही एक रक्तरंजित हिंसक मुठभेड़ की गवाह तब बनी जब सुकमा जिले के बुर्कापाल से निकले जवानों के दस्ते पर घात लगाए बैठे 300 कम्युनिस्ट आतंकियों ने हमला कर दिया

- कैम्प से लगभग 500 मीटर की दूरी पर हुए इस हमले से पहले माओवादियों ने मिलिशिया सदस्यों के माध्यम से जवानों की रेकी की थी जिसके उपरांत लगभग 100 की संख्या में सुरक्षा बलों के दो टीमों में विभाजित होते ही माओवादियों ने उनपर हमला बोल दिया

- इस हमले में माओवादियों की ओर से एके-47, आईडी बमों एवं कई अन्य अत्याधुनिक हथियारों का उपयोग किया गया था जिसके बलबूते माओवादी जवानों को घेरने एवं मुठभेड़ के दौरान जवानों के हथियार लूटने में भी सफल रहे

- हालांकि अचानक हुए हमले से संभलते हुए सुरक्षाबलों ने भी जबरदस्त जवाबी कार्यवाही की जिसमे लगभग 10-12 माओवादी मारे गए

- फ़िर भी संख्या में अधिक रहे कम्युनिस्ट आतंकियों द्वारा घात लगाकर किए गए इस हमले में मां भारती के 25 वीर सपूत बलिदान हो गए।

विधायक परिमल साहा हत्याकांड त्रिपुरा

(जब हत्या के आरोपी कैडरों को बचाती रही कम्युनिस्ट सरकार)

- जहां कहीं भी कम्युनिस्ट सत्ता में आए उनके द्वारा सत्ता की शक्ति का उपयोग विरोधियों की बर्बर हत्याएं एवं विपरीत विचारधारा को जड़ से मिटाने के लिए किया जाता रहा है।
- भारत के संदर्भ में पश्चिम बंगाल एवं केरल इसके प्रत्यक्ष उदाहरण माने जाते रहे हैं, हालांकि कम्युनिस्टों की राजनीतिक हिंसा के माध्यम से सत्ता में बने रहने की असल प्रयोगशाला एक ऐसा राज्य रहा है।
- जहां कम्युनिस्ट प्रेरित राजनीतिक हिंसा का ना केवल लंबा इतिहास रहा है अपितु यहां कम्युनिस्ट तंत्र के दबदबे से न्याय तो दूर हिंसा की ये घटनाएं कभी राष्ट्रीय स्तर पर चर्चाएं भी नहीं बटोर पाई।
- ऐसे ही एक घटनाक्रम में वर्ष 1983 में कम्युनिस्ट कैडरों द्वारा त्रिपुरा के चरिमाल विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित विधायक परिमल साहा एवं उनके सहयोगी जितेंद्र की दिनदहाड़े बर्बरता से हत्या कर दी गई थी।
- इस जघन्य हत्याकांड में कुल 25 कम्युनिस्ट कैडर शामिल थे, जिसकी जांच को राज्य की कम्युनिस्ट सरकार द्वारा वर्षो तक जानबूझ कर धीमी गति से आगे बढ़ाया गया।
- परिणामस्वरूप दिनदहाड़े हुई इस बर्बर हत्या के दोषियो की सजा का एलान होने में 33 वर्ष लग गए और जब सजा का एलान हुआ
- तो उनमें से 7 लोगो की प्राकृतिक रूप से मृत्यु हो चुकी थी जबकि एक आरोपी को इतने वर्षों में भी त्रिपुरा की कम्युनिस्ट सरकार पकड़ नहीं पाई।

झीरम घाटी हत्याकांड

(जब कम्युनिस्ट आतंकियों ने लांघी बर्बरता की सीमाएं)

- 25 मई वर्ष 2013 को छत्तीसगढ़ राज्य के झीरम घाटी में राज्य के कांग्रेस नेताओं के काफिले पर घात लगाए बैठे नक्सलियों (कम्युनिस्ट आतंकियों) ने हमला बोल दिया।
- हमले का षड्यंत्र सुनियोजित था जिसमे बस्तर टाइगर के नाम से प्रसिद्ध महेंद्र कर्मा माओवादियों का मुख्य निशाना थे।
- माओवादियों ने पहले तो सड़क पर पेड़ गिराकर नेताओं के काफिले को अवरुद्ध किया और फिर जैसे ही गाड़िया रुकी घात लगाए बैठे लगभग 200 नक्सलियों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दी।
- अचानक हुए इस हमले में कई नेताओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि शुरुवाती गोलीबारी में जीवित बचे लोगों को माओवादीयों ने चाकुओं से गोद डाला।
- इस हमले में माओवादियों ने महेंद्र कर्मा को जिंदा पकड़ा था जिसके उपरांत उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई, कर्मा को 100 से अधिक गोलियां मारी गई थी जबकि 50 से अधिक स्थानों पर उन्हें चाकुओं से गोदा गया था।
- हालांकि इतनी निर्मम हत्या के बाद भी जब वामपंथी रक्तपिपसा नहीं मिटी तो बर्बता की सीमाएं लांघ माओवादियों ने महेंद्र कर्मा के शव के ऊपर चढ़कर नृत्य भी किया।
- इस जघन्य हत्याकांड में कांग्रेस के दिग्गज नेताओं समेत कुल 32 लोग मारे गए थे हालांकि आज 9 वर्षो के उपरांत भी झीरम को लहूलुहान करने वाले कम्युनिस्ट आतंकियों को पकड़ा नहीं जा सका है।

धर्मजन एवं यशोदा हत्याकांड, केरल (1982)

(जब वैचारिक द्वेष में कम्युनिस्टों ने की निर्मम हत्या)

- बात 80 के दशक के केरल के अलप्पुझा की है जहां दो बेटियों के पिता धर्मजन कम्युनिस्ट विचारधारा के समर्थक थे, हालांकि भारतीय सेना में अपनी सेवाएं दे चुके धर्मजन का कुछ ही वर्षों में कम्युनिस्ट विचार से मोहभंग हो गया।

- इस दौर में ही धर्मजन राष्ट्रवादी विचार से प्रभावित हुए और परिणामस्वरूप वे संघ के स्वयंसेवक बन गए उन्होंने संगठन से जुड़कर सक्रिय रूप से शाखा एवं दूसरे गतिविधियों में भाग लेना भी शुरू कर दिया।

- राजनीतिक हिंसा को न्यायोचित ठहराने वाले कम्युनिस्टों को धर्मजन का कम्युनिस्ट विचार से अलग होकर संघ का स्वयंसेवक बनना इतना चुभा की उन्होंने धर्मजन की हत्या का षड़यंत्र रचा।

- और 13 जून को कम्युनिस्ट कैडरों ने धर्मजन पर जानलेवा हमला कर दिया, धर्मजन पर यह हमला तब किया गया था जब वे अपनी पत्नी यशोदा और बेटी के साथ जा रहे थे।

- दिनदहाड़े हुए इस हमले में कम्युनिस्टों ने साइकल के चेन से पीट पीटकर धर्मजन और उनकी पत्नी यशोदा की निर्मम हत्या कर दी जबकि उनकी बड़ी बेटी गिरिजा ने भागकर बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई।

- कम्युनिस्ट उग्रवाद को उसके मूल स्वरूप में प्रतिबिंबित करते इस निर्मम हत्याकांड की स्मृति आज भी लोगों को झकझोर देती है।